कार्यक्रम विशिष्ट अनुवर्तन

एक छात्र, जिसने स्नातक या स्नातकोतर कार्यक्रम में प्रवेश लिया है तथा विषय के रूप में हिंदी को चुना है से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होने की उम्मीद है:

- छात्र हिंदी भाषा को बेहतर तरीके से जानने और समझने लगता है।
- छात्र हिंदी के व्याकरण और साहित्य की विभिन्न पेचीदगियों का ज्ञान और समझ हासिल करता है।
- छात्र भारत की समृद्ध लोक और सांस्कृतिक विरासत का ज्ञान और समझ प्राप्त करता है।
- हिंदी भाषा का ज्ञान उन्हें हिंदी साहित्य का अध्ययन करते समय गंभीर रूप से सोचने में मदद करता है। वे साहित्य और वास्तविक जीवन के आनंद को जोड़ने में सक्षम होते हैं।
- हिंदी भाषा और साहित्य की मूल अवधारणाओं और उत्पत्ति को समझता है।
- हिंदी साहित्य के विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए नई विधियों की खोज करने की प्रक्रिया के साथ और इसके विषयों को समझने के लिए नई दिशा मिलती है।
- भारतीय इतिहास में विभिन्न कालखंडों के अनुसार हिंदी साहित्य की जड़ों इसके विभिन्न विषयों और शैलियों के बारे में जानना।
- हिंदी साहित्य के दार्शनिक पहलुओं को विस्तृत रूप से समझना।
- अतीत से वर्तमान तक हिंदी की अवधारणा का मूल्यांकन करना और साहित्य के माध्यम से समाज का बारीकी से अध्ययन होता है।

पाठ्यक्रम अनुवर्तन

- छात्र अपनी पसंद के विषयों में प्रवीणता के साथ स्नातक होगा।
- छात्र अपने विषयों में उच्च अध्ययन जारी रखने के लिए पात्र होगा।
- छात्र विदेश में उच्च अध्ययन करने के लिए पात्र होगा।
- छात्र सरकारी संगठनों में नौकरियों के लिए परीक्षा में बैठने के पात्र होंगे।
- छात्र समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक कुशल कार्यबल का हिस्सा बनने में सक्षम होंगे।
- छात्रों का राष्ट्रभाषा के साथ जुड़ाव विकसित होगा।
- विभिन्न कवियों और लेखकों द्वारा लिखी गई कविताओं और कहानियों की मदद से छात्रों को वास्तविक दुनिया की स्थिति का ज्ञान हासिल होगा ।

स्नातक प्रथम वर्ष

प्रयोजनमूलक हिंदी HIND- 101

अनिवार्य हिंदी – बी.ए. / बी.कॉम प्रथम वर्ष

इकाई – 1 1.1 पत्र लेखन, प्रारूपण, टिप्पण, प्रतिवेदन, पत्राचार अर्थ एवं प्रकार, व्यावहारिक, व्यावसायिक एवं सरकारी पत्र लेखन, अनुवाद : परिभाषा, विशेषता एवं उपयोगिता

इकाई – 2 2.1 मुहावरे और लोकोक्तियां, अर्थ, परिभाषा एवं विभिन्न मुहावरे तथा लोकोक्तियां

2.2 शब्द–शुद्धि, वाक्य शुद्धि और शब्द ज्ञान (तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी)

इकाई – 3 3.1 पर्यायवाची एवं विलोम शब्द

3.2 अनेकार्थी, वाक्य या वाक्यांश के लिए एक शब्द अथवा अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

3.3 देवनागरी लिपि अर्थ, नामकरण, विशेषताएं, वैज्ञानिकता, मानकीकरण एवं सुधार के उपाय

इकाई – 4 4.1 कम्प्यूटर में हिन्दी प्रयोग : कम्प्यूटर की संरचना, वर्तनी संशोधन एवं इन्टरनैट कार्यप्रणाली

4.2 पारिभाषिक शब्दावली

4.3 कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद : विशेषताएं, अनुवाद–प्रक्रिया, समस्याएं एवं कठिनाइयां

लक्ष्य – प्रयोजनमूलक हिंदी विषय अपने आप में गूढ़ विषय है, जिसमें प्रारूपण, प्रतिवदेन, टिप्पणी, मीडियालेखन, पत्र–लेखन, अनुवाद, शब्द–शोधन, कंप्यूटर, मुहावरे और लोकोक्तियां आदि विषयों का समावेश किया गया है। इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य है कि कंप्यूटर युग में विद्यार्थियों को व्यावहारिकता में हिंदी भाषा का ज्ञान हो, व्याकरण की दृष्टि से विद्यार्थियों को भविष्य में भाषा से संबंधित कोई कठिनाई न हो।

प्रतिफल : प्रयोजनमूलक हिंदी पाठ्यक्रम का लक्ष्य उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों को एक बार स्कूल शिक्षा के दौरान प्राप्त किए गए ज्ञान को स्मरण कराना ताकि प्रारूपण, प्रतिवदेन, टिप्पणी, सम्पादकीय लेखन जैसे विषयों में कुशलता प्राप्त हो सकें।

हिंदी साहित्य का इतिहास DSC-1A HIND-102

इकाई–1

काल विभाजन एवं नामकरण, सिद्ध, नाथ एव ं जैन साहित्य

आदिकाल की विशेषताए ं, पम्रुख रासोकाव्य

इकाई–2 – भक्ति आन्दोलन, सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

प्रमुख निर्गुण कवि, सुगम कवि, भक्ति काल की सामान्य विशेषताएं

इकाई–3 रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, रीतिवद्ध, रीति सिद्ध तथा रीतिमुक्त कवि

इकाई–4 : 1857 का स्वतंत्रता संघर्ष आरै हिंदी नव–जागरण, भारतेदुं युगीन साहित्य की विशेषताएं

महावीर प्रसाद द्विवेदी और उन का युग

मैथिली शरण गुप्त और राष्ट्रीय काव्य धारा

छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयागवाद और नई कविता एवं हिंदी में गद्य विद्याओं का उद्भव और विकास–

उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध।

लक्ष्य : हिंदी साहित्य के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होगा है कि आरम्भ में गार्सा–द–तासी, शिवसिंह सेंगर, डॉ. ग्रियर्सन, मिश्र बंधुओं आदि ने सामग्री संकलन का कार्य किया तथा आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने उनकी विभिन्न प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया। आज हिंदी साहित्य के इतिहास का नामकरण, काल विभाजन एवं प्रवृतियां प्रचलित हैं, उसमें आचार्य रामचंद्र शुक्ल का सराहनीय योगदान है।

प्रतिफल : शताधिक विद्वानों ने हिंदी साहित्य के क्षत्रे में जो अनुसंधान कार्य किया है, उस के साहित्य के विद्यार्थी लाभान्वित होंगे। निश्चिय ही भविष्य में हिंदी साहित्य का इतिहास उपरोक्त पाठ्यक्रम से बहुत सी नई सामग्री प्रकाश में आई है, इससे निश्चिय ही साहित्य के विद्यार्थी ज्ञान पाने की लालसा में अतिरिक्त परिश्रम करना पड़े तो निरर्थक नहीं होगा।

मध्यकालीन हिंदी कविता DSC-1B HIND-103

इकाई–1

1. कबीर और सूरदास का व्यक्तित्व, कृतित्व एवं काव्यगत विशेषताएं

इकाई–2

1. तुलसीदास तथा मीराबाई का व्यक्तित्व एवं काव्यगत विशेषताएं

तुलसीदास – बालकांड

उत्तरकांड 96, 106 पद

विनय पत्रिका– पद संख्या 105, 111, 162

मीराबाई के पद – 5, 17, 18, 19, 22, 23, 25, 41, 73, 158

इकाई–3 – रसखान तथा बिहारी का व्यक्तित्व

कृतित्व : सामान्य परिचय एवं काव्यगत विशेषताएं

रसखान के पद सख्ंया – 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7

बिहारी के दोहे – 2, 15, 20, 25, 38, 46, 69, 70, 110, 123

इकाई–4

1. भूषण एवं घनानंद का व्यक्तित्व, कृतित्व एवं काव्यगत विशेषताएं

भूषण के 2 से 9 तक दोहे और घनानंद के पद 1 से 8 तक

लक्ष्य :– उपरोक्त पाठ्यक्रम हिंदी साहित्य के विद्यार्थियों को मध्यकालीन कवियों के द्वारा लिखी गई रचनाओं को समझने का अवसर देता हैं। ये साहित्य शाश्वत होने के साथ–साथ लाकेहित की सिद्धि के कारण प्रासंगिक है। कबीर, सूरदास, तुलसीदास, मीरा, रख्सखान, बिहारी, भूषण, घनानंद भक्तिकाल एवं रीतिकालीन महात्माओं द्वारा सृजित एक ऐसा साहित्य है, जो नैतिक एवं उच्च आदर्शों एवं मानव मूल्यों से ओत –प्रोत है।

लोकनायक तुलसीदास हो या सूरदास इन सभी ने ज्ञान और कर्म के समन्वय के द्वारा तथा निष्काम कर्म के उपदेश के द्वारा स्वार्थ और परार्थ के द्वंद्व को समाप्त किया। मीराबाई की पदावली में तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति, मीरा का सामंती एवं पितृस्तात्मक व्यवस्था के प्रति विद्रोह के स्वर के साथ नारी चेतना पर विस्तारपूवर्क चित्रण हुआ है। रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि घनानंद में काव्य में एक निष्ठ प्रेम का चित्रण हिंदी साहित्य की चिरस्थायी सम्पति है।

प्रतिफल : इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थी जानने में सक्षम होगा कि इतिहास का वह दौर कैसा था। आज कंप्यूटर युग में विद्यार्थी उस दौर को वर्तमान संदर्भ में कैसे देखता है। संत कबीरदास के विचारों को पढ़कर विश्वास नहीं होता कि एक अनपढ़ व्यक्ति अपने समय की सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध इतने प्रबल तर्क उस राजनीतिक व्यवस्था में कैसे दे पाया होगा।

उपराक्त पाठ्यक्रम की बेहतर समझ बनाने की दृष्टि से विद्यार्थियों में नैतिकता बनाए रखने के लिए तथा सामाजिक विषमताओं को दूर करने की रुचि पैदा होगी। मध्यकालीन साहित्य के माध्यम से परिवेश के प्रति संवदेनात्मक दृष्टि पैदा करने की ओर प्रवृत्त होगें।

क्षमतावृद्धि अनिवार्य पाठ्यक्रम AECC-2

हिंदी भाषा और सम्प्रेषण HINDI-104

बी.ए./बी.कॉम/बी.एससी प्रथम वर्ष

इकाई – 1 1.1 भाषा की परिभाषा, प्रकृति एवं विविध रूप

1.2 हिंदी भाषा की विशेषताएँ : क्रिया, विभक्ति, सर्वनाम, विश्लेषण एवं अव्यय संबंधी।

1.3 उपसर्ग, प्रत्यय तथा समास। पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, शब्द शुद्धि, वाक्य शुद्धि, मुहावरे और लोकोक्तियां ।

इकाई – 2 2.1 हिंदी की वर्ण–व्यवस्था : स्वर एवं व्यंजन।

2.2 स्वर के प्रकार – ह्रस्व, दीर्घ तथा संयुक्त।

2.3 व्यंजन के प्रकार – स्पर्श, अन्तस्थ, ऊष्म, अल्प्रप्राण, महाप्राण, घोष तथा अघोष।

इकाई – 3 3.1 वर्णों का उच्चारण स्थान : कण्ठ्य, तालव्य, मूर्द्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य तथा दन्तोष्ठ्य।

3.2 बलाघात, संगम, अनुतान तथा संधि।

इकाई – 4 4.1 भाषा संप्रेषण के चरण : श्रवण, अभिव्यक्ति, वाचन तथा लेखन।

4.2 हिंदी वाक्य रचना, वाक्य और उपवाक्य। वाक्य भेद। वाक्य का रूपान्तर।

4.3 भावार्थ और व्याख्या, आशय लेखन, विविध प्रकार के पत्र लेखन।

लक्ष्य – उपरोक्त पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को अनिवार्य रूप से अध्ययन करना है। इसलिए जो विद्यार्थी दसवीं कक्षा के बाद हिंदी व्याकरण के ज्ञान से वंचित हो जाते हैं, वे विद्यार्थी पुनः व्याकरण के माध्यम से वर्णमाला, समास, सन्धि, मुहावरे आदि का ज्ञान अर्जित करेंगे।

प्रतिफल – प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी व्याकरण का विशेष महत्व है। व्याकरण के ज्ञान से छात्र सरकारी संगठनों में नौकरियों के लिए परीक्षा में सफलता पाने में सक्षम होंगे जैसे यूपीएससी पीसीएस आईएफएस बैंकिंग क्षेत्र आदि। छात्र समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक कुशल कार्यबल का हिस्सा बनने में सक्षम होंगे।

स्नातक द्वितीय वर्ष

अनिवार्य हिंदी HIND-201

रचना पुंज बी.ए./बी.कॉम द्वितीय वर्ष

इकाई–1 :– कबीर, घनानंद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला तथा बाल कृष्ण शर्मा नवीन

कबीर– 15 दोहे घनान्द–तीन कवित्त, तीन सवैये

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला– तोड़ती पत्थर, विनय

बालकृष्ण शर्मा नवीन – विप्लव गायन

इकाई–2 अज्ञेय– कितनी नावों में कितनी बार, दूर्वाचल

मुक्तिबोध : मुझे तुम्हारा साथ मिला, ओ मघे

धूमिल – दस्तक, रोटी और संसद

इकाई–3 : प्रेमचदं , मोहन राकेश, काशीनाथ सिंह

ईदगाह, मलबे का मालिक, अपना रास्ता लो बाबा

उदय प्रकाश– छप्पन तोले का करधन

इकाई–4 महादेवी वर्मा– जीने की कला

रामधारी सिंह दिनकर– नेता नहीं नागरिक चाहिए

श्री लाल शुक्ल – अंगद का पावं

लक्ष्य – उपरोक्त पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को अनिवार्य रूप से अध्ययन करना है। इसलिए जो विद्यार्थी दसवीं कक्षा के बाद हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं से वंचित हो जाते हैं, वह विद्यार्थी पुनः कविता, कहानी, निबंध के माध्यम से पठन–पाठन में रुचि विकसित कर सकते हैं।

प्रतिफल – इस पाठ्यक्रम के तहत छात्रों के पास एक अवसर होता है कि वे कहानी, कविता व निबंध लेखन के क्षेत्र में भी रचना–कर्म कर सकते हैं और अनिवार्य विषय गैर–साहित्यिक विद्यार्थियों के लिए रूचिकर हो सकता है तथा पठन–पाठन एवं लेखन के क्षत्रे में अपनी प्रतिभा को तराश सकते हैं। इस पाठ्यक्रम में गद्य–पद्य दानों तरह की रचनाओं को पढ़ने का अवसर प्राप्त होता है ताकि विद्यार्थी अपनी रूचि का विषय का चयन कर सकें तथा कहानियों और निबंधों का अध्ययन कर आधुनिक परिप्रेक्ष्य में मलूयांकन कर अपने–अपने अनुभवों को समानुदेशन में अभिव्यक्त कर सकने में सक्षम हो सकते हैं।

आधुनिक हिंदी कविता DSC-1C HIND-202

इकाई 1– भारतेन्दु हरिश्चंद्र और अयोध्या सिंह उपाध्याय का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : समान्य परिचय

भारतेन्दु हरिश्चंद्र – भारत दुर्दशा, वर्षा विनोद, प्रेम मालिका, प्रेमाश्रु वर्षण

अयोध्या सिंह उपाध्याय – प्रिय प्रवास, दु:खिया के आंसू, एक बूंद , कांटा और फूल

इकाई 2– मैथिली शरण गुप्त तथा जयशंकर प्रसाद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

मैथिली शरण गुप्त – भारत–भारती, मातृभूमि, आशा, सन्देश

जयशंकर प्रसाद – ले चल मुझे भूलावा देकर, बीती विभावरी जागरी

अरुण यह मधुमय देश हमारा, ह्रदय का सौंदर्य

इकाई 3– सूर्यकातं त्रिपाठी निराला तथा सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायायन अज्ञेय का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : सामान्य परिचय

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला– वर दे वीणा वादिनी वर दे, तोड़ती पत्थर, स्नेह–निर्झर बह गया है, विधवा

अज्ञेय – उड़ चल हारिल, कलगी बाजरे की, सांप, नया कवि : आत्म स्वीकार

इकाई 4– नागार्जुन तथा नरेश मेहता का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
नागार्जुन–यह दंतुरित मुस्कान, प्रेत का बयान
नरेश मेहता– तीर्थजल, पीले फूल कनेर के, मेघ मैं

लक्ष्य– उपरोक्त पाठ्यक्रम का लक्ष्य विद्यार्थियों को आधुनिक हिंदी कविता की जानकारी देना तथा कविता के माध्यम से देश की सांस्कृतिक, सामाजिक पृष्ठभूमि से अवगत कराना है। इस पाठ्यक्रम में उन कविताओं को स्थान दिया गया है जो आधुनिक युग की प्रवृतियों एवं समकालीन बोध को अभिव्यक्त करने में सक्षम हैं। समय के अनुसार परिवर्तनशील मूल्य बह जाते हैं, लेकिन शाश्वत मूल्य अस्तित्व बनाए रखने में सक्षम होते हैं।

प्रतिफल – विद्यार्थियों को संबंधित कवियों की कविताओं का अध्ययन कर समानुदेशन तैयार करने को कहा जा सकता है, क्योंकि समय के अनुसार विचारधारा में परिवर्तन होता रहता है। कविता का सम्बन्ध हृदय की अनुभूतियों से है इसलिए कविता शाश्वत व कालजयी है।

हिंदी गद्य साहित्य DSC-1D HIND- 203

इकाई 1– जैनेन्द्र कुमार : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
उपन्यास – त्यागपत्र : तात्विक समीक्षा

इकाई 2– प्रेमचदं – नमक का दरोगा
जयशंकर प्रसाद– आकाश दीप
यशपाल– पर्दा। उषा प्रियंवदा– वापसी

इकाई 3– रामचद्रं शुक्ल तथा आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
लोभ और प्रति – रामचंद्र शुक्ल
उपरोक्त निबंधों की तात्विक समीक्षा

इकाई 4 – संस्कृति आरै समीक्षा – महादेवी वर्मा
भूमण्डलीकरण, धार्मिक समाज और पूंजीवाद–प्रभाखेतान
उपर्युक्त निबंधों की तात्विक समीक्षा

लक्ष्य– उपन्यास मानवजीवन का सच्चा दस्तावेज है। 'त्याग पत्र' उपन्यास की लोकप्रियता के कारण इसे पाठ्यक्रम में स्थान दिया है। अन्य उपन्यासकारों की अपेक्षा लेखक ने दार्शनिकता को प्रधानता दी है और मृणाल पात्र के माध्यम से नारी शाषेण की समस्या के साथ मृणाल के जीवन संबंधी अपने मूल्य को पुष्ट किया है।

प्रतिफल – उपन्यास व कहानी के माध्यम से विद्यार्थियों को समस्याओं से अवगत कराना तथा आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों को जागरुक कराना। इसके अतिरिक्त निबंधों के माध्यम से विविध विषयों की जानकारी उपलब्ध करना ताकि सभी विद्यार्थी समानुदेशन के द्वारा अपने विचार आज के परिप्रेक्ष्य में अभिव्यक्त कर सकें।

कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम SEC-1
कार्यालयी हिंदी HIND-204

इकाई 1– हिंदी भाषा के विभिन्न रूप– राष्ट्रभाषा, राजभाषा, जनभाषा, माध्यम भाषा, संचार भाषा, सृजनात्मक भाषा, यांत्रिक भाषा।

इकाई 2– राजभाषा का स्वरूप, भारतीय संविधान में राजभाषा सम्बन्धी परिनियमावली का सामान्य परिचय, राजभाषा के रूप में हिंदी के समक्ष व्यावहारिक कठिनाइयां एवं समाधान

इकाई 3 – टिप्पण, प्रारूपण, पल्लवन, संक्षेपण।
विभिन्न प्रकार के पत्राचार प्रशासनिक पत्राबली की निष्पादन प्रक्रिया

इकाई 4– परिभाषिक शब्दावली, कार्यालय हिंदी के विभिन्न यांत्रिक उपकरणों का अनुप्रयोग – कंप्यूटर लैपटॉप, टैबलटे , टेलीप्रिंटर, टेलेक्स, वीडियो कान्फ्रेसिंग

लक्ष्य– आधुनिक भारतीय भाषाओं में हिंदी भाषा सर्वाधिक व्यक्तियों द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा है। यह भारत की राष्ट्रीयता की नहीं अपितु अस्मिता की भी परिचायक है। आज देश–विदेश में हिंदी भाषा सृजनात्मक संचार, जन–भाषा, सम्पर्क भाषा आदि के रूप में नये कीर्तिमान स्थापित कर रही है। टीवी, कंप्यूटर मीडिया की हिंदी

धीरे–धीरे आप पहचान बनती जा रही है। प्रशासन की भाषा होने के कारण सरकारी दृष्टि से इस भाषा का महत्त्व बढ़ता जा रहा है।

प्रतिफल – केंद्र सरकार की नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत हिंदी भाषा के इस भविष्य में
शिक्षण–प्रशिक्षण और पठन–पाठन की व्यवस्था से नई पीढ़ी निश्चित रूप से लाभान्वित हो सकती है। स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को हिंदी भाषा के अध्ययन से सरकारी कार्यालयों से सम्बंधित प्रारूपण, प्रतिवेदन, टिप्पण आदि कार्यों का प्रारूप तैयार करके प्रतियोगी परीक्षाओं में कार्यालयी हिंदी के प्रयागे को बढ़ावा दिया जा सकता है। दैनिक व्यवहार, प्रशासन व्यवहार, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में हिंदी का ज्ञान सभी विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक होगा।

कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम SEC-2

अनुवाद विज्ञान HIND-206

इकाई 1– अनुवाद का तात्पर्य, अनुवाद का प्रकार–
भाषांतरण, अनुवाद तथा रूपांतरण में साम्य–वैषम्य, अनुवाद के प्रकार कार्यालयी, साहित्यिक, ज्ञान–विज्ञानपरक, वाणिज्यिक

इकाई 2– साहित्यिक अनुवाद के प्रमुख रूप–काव्यानुवाद, कथानुवाद, नाट्यानुवाद

इकाई 3– वैज्ञनिक तकनीकी शब्दावली का अनुवाद, महावरे लोकोतियों का अनुवाद
अनुवाद की संपादन प्रविधि, अनुवादके की अर्हता
सफल अनुवाद के लक्षण

इकाई 4– विश्व भाषाओं की प्रमुख कृतियों के हिंदी अनुवाद एवं हिंदी की प्रमुख कृतियों के विश्व भाषाओं के किए गए अनुवाद भारत के अनुवाद प्रशिक्षण के प्रमुख केंद्र, अनुवाद के राष्ट्रीय प्राधिकरण के गठन की आवश्यकता हिंदी अनुवाद का भविष्य

लक्ष्य – आधुनिक तकनीकी युग में विद्यार्थियों के लिए अनुवाद का महत्त्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। देश–विदेश में होने वाले अनुसंधान, व्यवसाय के क्षत्रे में एक वस्तु का विज्ञापन विभिन्न भाषाओं में करना, साहित्य, शिक्षा, विज्ञान तथा तकनीकी, राजनीतिक एवं कूटनीतिक, विभिन्न देशों के शिष्टमण्डलों का विश्व की समस्याओं पर चिन्तन, संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का अनुवाद के साथ, व्यापक सम्बन्ध है।

प्रतिफल – अनुवाद के क्षत्रे में काम, रोजगार की अपार सम्भावनाएं हैं। आज हिंदी अनुवादकों के पद पर असंख्य लोग आजीविका कमा रहे हैं। अनुवाददाता के बिना संसर के किसी भी भाषा की संस्कृति, धर्म–दर्शन, सभ्यता आचार–विचार से परिचित होना संभव नहीं है। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों को लाके में फैले मौखिक साहित्य को अनुवादित करने की परियोजनाओं से जोड़ा जा सकता है।

स्नातक तृतीय वर्ष

कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम SEC-3

रंग आलेख एवं रंगमंच HIND-301

इकाई–1 नाटक के प्रमुख प्रकार और उनका रचना विधान– एकांकी, लोकनाटक, प्रहसन, काव्य–नाटक, नुक्कड़ नाटक, प्रतीक–नाटक, भाव–नाटक, रेडियो टी.वी. नाटक

इकाई–2 हिंदी नाटक शास्त्र और नाट्य–लेखन का इतिहास
हिंदी नाटक की प्रमुख प्रवृत्तियां– समाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, समस्यामूलक तथा एवसर्ड नाटक

इकाई 3– हिंदी के प्रमुख नाटक और नाटककार
हिंदी रंगमंच के प्रमुख रूप– शौकीया मंच, व्यावसायिक मंच, सरकारी मंच, हिंदी क्षत्रे की प्रसिद्ध रंग शालाएं तथा संस्थाएं

इकाई 4– रंगशिल्प प्रशिक्षण, रंग स्थापत्य, रंग सज्जा, रंग दीपन, ध्वनि–व्यवस्था एवं प्रसाधन निर्देशन एवं अभिनय, रंगमंचीय भाषा की विशेषताएं

लक्ष्य– विद्यार्थियों को रंगमंच की जानगारी प्रदान करना।

प्रतिफल – इस पाठ्यक्रम के माध्यम से मौखिक साहित्य के लाके –नाटकों को संकलित करने की दृष्टि से विद्यार्थियों में रिसर्च के साथ–साथ शास्त्रीय नाटकों से जोड़कर तुलनात्मक अध्ययन हेतु तैयार किया जा सकता है। इसका प्रतिफल होगा कि– नाटक समाजिक बदलाव में किस प्रकार भूमिका अदा करते हैं, इससे विद्यार्थियों का अवगत करा कर नाटक के प्रति रूझान पैदा करना। नाटक सामाजिक समस्याओं को लेकर छात्रों द्वारा मंचन करके आम जनता को जागृत करने का सशक्त माध्यम है। यह सभी कलाओं की तरह विद्यार्थियों को नए तरीके से संवाद करने और समझाने का सरल माध्यम है।

कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम SEC-4

समाचार संकलन और लेखन HIND-304

इकाई 1– समाचार अवधारणा परिभाषा, बुनियादी तत्व, समाचार और संवाद, संरचना, समाचार मूल्य, समाचार के स्रोत।

इकाई 2 समाचार का वर्गीकरण : खोजी व्याख्यापरक, प्रवर्तन समाचार। सम्वाददाता– भूमिका अर्हता श्रेणियां रिपोर्टिंग के क्षत्रे और प्रकार : विधायिका, न्यायपालिका, मंत्रालय और प्रशासन, विदेश, रक्षा, राजनीति, अपराध और न्यायालय, दुर्घटना एवं नैसर्गिक आपदा, ग्रामीण, कृषि विकास अर्थ एवं वाणिज्य, बैठके ंएवं सम्मले न, संगोष्ठी, खेलकूद, पर्यावरण

इकाई 3– इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों से प्राप्त समाचारों का पुनर्लेखन

लीड– अर्थ प्रकार विशेषता, महत्त्व

इकाई 4 – शीषर्कः अर्थ, प्रकार, लिखने की कला, मास रिपोर्टिंग : कला और विज्ञान के रूप में विश्लेषण वस्तुपरकता और भाव–शैली

लक्ष्य – लोकतंत्र में पत्रकारिता की भूमिका व प्रासंगिकता से विद्यार्थियों को अवगत कराना तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं को लेकर विद्यार्थियों में रुचि पैदा करना। लोकतंत्र के चौथे सतम्भ को सशक्त बनाने हेतु साक्षात्कार के बारे अवगत कराना। समाचार अधिक ज्ञान और सूचना प्राप्त करने के साथ आत्मविश्वास और कुशलता के स्तर को बढ़ाने का अच्छा स्रात े है।

प्रतिफल – तकनीकी क्षेत्रों में आज कई प्रकार के सोशल मीडिया मचं उपलब्ध हैं, जहां विद्यार्थी अपने घर पर ही अपने यू–ट्यूब न्यूज़ चैनल्स के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों, राजनीतिक गतिविधियों व अन्य आवश्यक मुद्दों पर अपनी राय रखने के लिए उपरोक्त पाठ्यक्रम का व्यवहारिक इस्तेमाल कर सकते हैं। पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को छोटी–छोटी परियोजनाओं के द्वारा पंचायत और नगर निकायों की नीतियों पर अपनी राय रखने के लिए तैयार किया जा सकता ह ै।

लोक साहित्य DSE-1A HIND-305

इकाई 1– लोक साहित्य परिभाषा एवं स्वरूप, लोक साहित्य के विशिष्ट अध्येता, लोक संस्कृति अवधारणा, लोक संस्कृति और साहित्य

लोक साहित्य के प्रमुख रूप– लोकगीत, लोक नाट्य, लोक कथा, लोक गाथा

इकाई 2– लोक गीत– संस्कार गीत, व्रत गीत, श्रम परिहार गीत, ऋतु–गीत, लोक नाट्य– रामलीला, स्वांग, यक्षगान, तमाशा, नौटंकी, जात्रा और कथकली

इकाई 3– लोक कथा– ब्रतकथा, परीकथा, नागकथा, बोधगाथा, कथा नकरूढ़ियां एव ं अभिप्राय, लोककथा निर्माण में लोकगाथा, लोकगाथा की भारतीय परम्परा, लोकगाथा की सामान्य प्रवृत्तियां, लोकगाथा प्रस्तुति

इकाई 4– प्रसिद्ध लोक गाथाएं– भरथरी, गूगा गाथा, गढ़ मलौण, मदना की हार, मोहणा, नूरपुर का राजा जगत सिंह, सुन्नी–भुंकू, कुंजू–चंचलो, रानी सुनैना

लक्ष्य– लोक साहित्य की रचना जनता–जनार्दन द्वारा की जाती है। जन समूह की भावनाएं जैसे हर्ष, विषाद, भय, प्रेम, दया, करुणा आदि की सामूहिक अभिव्यक्ति गीत, व्यथा आदि के रूप में होती है। आज लुप्तप्रायः लोक

साहित्य की विभिन्न विधाओं से विद्यार्थियों को अवगत कराना और लोक–साहित्य अध्ययन के लिए जागरूक करना पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

प्रतिफल – एक क्षेत्र की संस्कृति से दूसरे क्षेत्र की संस्कृति की भिन्नता और समानता का अध्ययन कर तुलनात्मक अध्ययन हेतु विद्यार्थियों को तैयार करना। लोक–साहित्य के महत्त्व के बारे में जागरूक करना तथा लोक गीतों, लोक कथाओं, लोकोक्तियों को संग्रहित करने के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना भी पाठ्यक्रम का लक्ष्य है।

छायावादोत्तर हिंदी कविता DSE-1B HIND-306

इकाई 1– सचिदानंद हीरानंद वात्स्यायन तथा मुक्तिबोध का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : सामान्य परिचय

अज्ञेय : कलगी बाजरे की, यह दीप अकेला

मुक्तिबोध – भूल गलती, एक रंग का राग

इकाई 2– नागार्जुन तथा शमशरे बहादुर सिंह : व्यक्तित्व एवं कृतित्व : सामान्य परिचय

नागार्जुन – अकाल और उसके बाद, कालिदास

शमशरे बहादुर सिंह– सूना–सूना पथ है, उदास झरना, वह संलोना जिस्म

इकाई 3– भवानी प्रसाद मिश्र– कहीं नहीं बचे, गीत फरोश

कुंवर नारायण– नचिकेता

इकाई 4 – सर्वेश्वर दयाल सक्सेना तथा केदारनाथ सिंह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : सामान्य परिचय

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना– मैंने कब कहा, हम लागे चलेंगे

केदार नाथ सिंह– रचना की आधी रात, फर्क नहीं पड़ता

लक्ष्य – 'छायावादोत्तर हिंदी कविता' में आधुनिक कविता के विविध वाद एवं विचारधाराओं का समावेश है। आधुनिक हिंदी काव्य का सामान्य जन से सरोकार रहा, इसलिए इस युग की कविता मानव अस्तित्व की गरिमा का बोध कराती है। छायावादोत्तर कवियों ने समाज में व्याप्त कुरीतियों में सुधार करने के प्रयास किए।

प्रतिफल – प्रगतिवादी कविता में मानव जीवन में व्याप्त आर्थिक विषमताओं का चित्रण देखने को मिलता है। आजादी के बाद समूचे राष्ट्र में रचनात्मक अभिव्यक्तियां अपनी चेतना और व्यवहार में बिना किसी वाद का सहारा लिए व्यवस्था को चुनौती दे कर आम जनता के अधिकारों की मांग करती दिखाई पड़ती हैं। इन कविताओं का अध्ययन कर विद्यार्थियों (पाठकों) को आम जनता के अधिकारों को नए सिरे से परिभाषित करने की प्रक्रिया शुरू करने में सहायता मिल सकती है।

आधुनिक भारतीय साहित्य (GE-1) HIND-307

इकाई–1 स्वाधीनता संग्राम और भारतीय नवजागरण तथा उस का भारतीय साहित्य पर प्रभाव

भारतीय साहित्य और राष्ट्रीयता

इकाई 2– महात्मा गांधी और महर्षि अरविंद का भारतीय साहित्य पर प्रभाव

मार्क्सवाद एवं अस्तित्ववाद का भारतीय साहित्य पर प्रभाव

इकाई 3– अनंतमूर्ति : संस्कार उपन्यास

रविन्द्र नाथ टैगोर : गीतांजली, 1.वंदना, 2. परिचय, 3. वरदान

4. अरुण किरण, 5. सागर में ज्वार, 6. रात्री परीक्षा, 7. शरद सुंदरी

8. आषाढ़ की संध्या, 9. दिन ढल गया, 10. प्रिय व्यथा, 11. निर्झर, 12. अखंड आशा, 13. प्रकाश पुंज 14. रक्षा बंधन

इकाई 4 – विजय तेंदुलकर : घासीराम कोतवाल

लक्ष्य : यह पाठ्यक्रम उन विद्यार्थियों के लिए निर्धारित किया गया है, जो स्नातक स्तर पर हिंदी नहीं पढ़ते। इस पाठ्यक्रम में नवजागरण, भारतीय स्वाधीनता संग्राम तथा अलग–अलग विचारधाराओं और चिंतकों के सिद्धांतों के